Pahle Tolo Baad mein Bolo (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 481
Weekly Booklet : 481

(अमीरे अहले सुन्नत की किताब "गुफ़्तगू के आदाब" से नवीं क़िस्त)

# पहले तोलो बाद में बोलो

(सफ़हातः 18)

बोलने से पहले तोलने का त़रीक़ा 02
चुप रहने का त़रीक़ा 04
बात करने का दीनी या दुनियवी फ़ायदा 14
नदामत का बहुत बड़ा सबब 16

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

# पहले तोलो बाद में बोलो[1]

**दुआए अ़त्तार :** या अल्लाह पाक ! जो कोई 18 सफ़हात का रिसाला "पहले तोलो बाद में बोलो" पढ़ या सुन ले उसे बोलने से पहले तोलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, बे फ़ायदा और गुनाहों भरी गुफ़्तगू से बचा और उस को मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला नसीब फ़रमा।

اٰمِيْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते उबय बिन कअ़ब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की, कि मैं (सारे विर्द, वज़ीफ़े छोड़ दूंगा और) अपना सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी में सर्फ़ करूंगा। तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह तुम्हारी फ़िक्रों को दूर करने के लिए काफ़ी होगा और तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ कर दिए जाएंगे।

(ترمذی، 207/4، حدیث: 2465 ملتقطاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

## बे वुक़ूफ़ बे सोचे बोलता है

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** अ़क़्लमन्द पहले बात को तोलता है फिर मुंह से बोलता है और बे वुक़ूफ़ जो कुछ ज़बान पर आए बोलता चला जाता है, चाहे इस की वजह से ज़लील ही क्यूं न होना पड़े। चुनान्चे ह़ज़रते ह़सन बसरी

---

1... येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "गुफ़्तगू के आदाब" सफ़ह़ा 116 ता 129 से लिया गया है।

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : लोगों में मश्हूर था कि अ़क़्लमन्द की ज़बान उस के दिल के पीछे होती है, वोह बात करने से पहले अपने दिल से रुजूअ़ करता है यानी ग़ौर करता है कि कहूं या न कहूं ? अगर बात फ़ायदे वाली होती है तो कहता है वरना चुप रहता है। जब कि बे वुक़ूफ़ की ज़बान उस के दिल के आगे होती है कि इधर यानी दिल की त़रफ़ रुजूअ़ करने की नौबत ही नहीं आती बस जो कुछ ज़बान पर आए कह देता है। (تنبیہ الغافلین، ص115 ملخصًا)

## ज़बान संभाल लो सब काम संभल जाएंगे

जो ज़बान को संभालने में कामयाब हो जाता है, उस के सारे काम संभल जाते हैं। ह़ज़रते यूनुस बिन उ़बैद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जिस की ज़बान ठीक रहती है उस के सब काम ठीक रहते हैं।"

(इह़याउल उ़लूम (उर्दू), 3/339)(احیاء العلوم، 137/3)

## पहले तोलो, बाद में बोलो

जिस त़रह़ ख़रीदारी के वक़्त बे परवाई के सबब धोका खा जाने वाला पछताता है, इसी त़रह़ ज़बान को बिला ज़रूरत चलाने वाला भी पछताता है, एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अपनी बात को माल की त़रह़ मह़फ़ूज़ रखो और जब (उस माल यानी बात को) ख़र्च करना चाहो तो ख़ूब सोच समझ कर ख़र्च करो।"

## बोलने से पहले तोलने का त़रीक़ा

**ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** याद रखिए ! अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी मुबारक ज़बान से कभी भी कोई फ़ालत़ू लफ़्ज़ अदा न फ़रमाया और न कभी क़हक़हा लगाया।

काश ! ख़ामोशी की सुन्नत भी आ़म हो जाए और हमारी क़हक़हा लगाने यानी ज़ोर ज़ोर से हंसने की आ़दत भी निकल जाए। ऐ काश ! हम "बोलने" से पहले "तोलने" वाले बन जाएं। तोलने का त़रीक़ा येह हो सकता है कि इस से पहले कि अल्फ़ाज़ ज़बान से अदा हों अपने दिल से सुवाल कर लिया जाए कि इस बोलने का मक़्सद क्या है ? क्या मैं येह किसी को नेकी की दावत दे रहा हूं ? क्या येह बात जो मैं बोलना चाहता हूं उस में मेरा या किसी दूसरे का भला और फ़ायदा है ? क्या येह बात करने में मुझे सवाब मिलेगा ? मेरी बात कहीं ऐसे मुबालग़े (यानी बढ़ाने चढ़ाने) से पुर तो नहीं जो मुझे झूट में मुब्तला कर दे। झूटे मुबालग़े की मिसाल देते हुए ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "अगर एक मरतबा आया और येह कह दिया कि हज़ार मरतबा आया तो झूटा है।" (बहारे शरीअ़त, 3/519) येह भी सोचे कि मैं कहीं किसी की ख़ुशामद और झूटी तारीफ़ तो नहीं कर रहा ? किसी की ग़ीबत तो नहीं हो रही ? मेरी इस बात से किसी का दिल तो नहीं दुख जाएगा ? बोल कर नदामत (यानी शरमिन्दगी) के सबब रुजूअ़ करने या SORRY कहने की नौबत तो नहीं आएगी ? थूक कर चाटने यानी जोश में कही हुई बात वापस लेने की ज़रूरत तो नहीं पड़ेगी ? कहीं अपना या किसी दूसरे का राज़ फ़ाश (यानी ज़ाहिर) तो नहीं कर बैठूंगा ? बोलने से पहले बात को तोलने में अगर येह बात भी सामने आई कि इस बात में न नफ़ा है न नुक़्सान और न सवाब है न गुनाह, तब भी येह बात बोल देने में एक त़रह़ का नुक़्सान है क्यूंकि ज़बान को इस त़रह़ की फ़ुज़ूल और बे फ़ायदा गुफ़्तगू के लिए ज़ह़मत देने के बजाए अगर सवाब की निय्यत से لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) कह लिया जाए या दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया जाए तो यक़ीनन इस में फ़ायदा ही फ़ायदा है और येह अपने अनमोल वक़्त का जन्नत में ले जाने

वाला बेहतरीन इस्तिमाल है, ऐसे अ़ज़ीमुश्शान फ़ायदे का ज़ाएअ़ होना लाज़िमन नुक़्सान ही है।

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 305)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

## चुप रहने का त़रीक़ा

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** फ़ुज़ूल गोई गुनाह न सही मगर इस में मह़रूमियां और नुक़्सानात मौजूद हैं लिहाज़ा इस से बचना ही मुनासिब है। काश ! काश ! ऐ काश ! ख़ामोशी की आ़दत डालने की सआ़दत मिल जाती। हाथों हाथ ख़ामोशी की नेमत का ह़ासिल हो जाना ज़रूरी नहीं, इस के लिए ख़ूब कोशिश करनी होगी। जो चुप रहने की आ़दत बनाना चाहे उस को इस बात को संजीदा लेना होगा और मायूसी को अपनी डिक्शनरी से निकाल कर ख़ूब कोशिश करनी होगी। ह़ज़रते मुवर्रिक़ इ़ज्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक ऐसा मुआ़मला जिसे मैं 20 साल तक ह़ासिल करने की कोशिश करता रहा लेकिन पा न सका मगर फिर भी उस की त़लब (यानी मांग) नहीं छोड़ी। पूछा गया : वोह अहम चीज़ क्या है ? फ़रमाया : ख़ामोशी। (الزہد للامام احمد، ص310، قول نمبر:1762) "ख़ामोशी" की आ़दत बनाने के ख़्वाहिशमन्द को चाहिए कि ज़बान चलाने के बजाए मुम्किन हो तो रोज़ाना ज़रूरत की थोड़ी बहुत बातें लिख कर या इशारे से भी कर लिया करे, اِنْ شَآءَ الله इस त़रह़ ख़ामोशी की आ़दत बनना शुरूअ़ हो जाएगी।

## फ़ुज़ूल इशारे का भी ह़िसाब है

याद रहे कि फ़ुज़ूलगोई, फ़ुज़ूल निगाही यानी बे फ़ायदा इधर उधर नज़र डालना, फ़ुज़ूल मनाज़िर (SCENES) देखना, नॉर्मल हों या डीफ़ सब का फ़ुज़ूल

इशारे करना, फ़ुज़ूल आवाज़ें निकालना वग़ैरा वग़ैरा सब का बरोज़े क़ियामत हिसाब है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! "दावते इस्लामी" की तरफ़ से नेक बनाने वाले रिसाले "नेक आमाल" में 53 नम्बर "नेक अ़मल" है : क्या आज आप ने ज़बान को फ़ुज़ूल इस्तिमाल (यानी वोह गुफ़्तगू जिस से दीनी या दुनियावी फ़ायदा न हो) से बचाने की आ़दत बनाने के लिए कुछ न कुछ इशारे से गुफ़्तगू की ? (ज़हे नसीब ! रोज़ाना कम अज़ कम चार बार लिख कर और कम अज़ कम तीन बार इशारे से गुफ़्तगू की हो) ख़ामोशी की आ़दत बनाने की कोशिश के दौरान ऐसा भी हो सकता है कि फ़ुज़ूल बातों से बचने की कोशिश में चन्द रोज़ कामयाबी मिले मगर फिर ज़ियादा बातें करने की आ़दत पहले ही की तरह हो जाए, अगर ऐसा हो भी जाए तो हिम्मत मत हारिए, बार बार कोशिश कीजिए, जज़्बा सच्चा हुवा तो اِنْ شَآءَ الله कभी न कभी कामयाबी ज़रूर हासिल होगी। जैसा कि अ़रबी मक़ूला (यानी कहावत) है : اَلسَّعْیُ مِنِّیْ وَالْاِتْمَامُ مِنَ الله यानी कोशिश मेरी तरफ़ से होगी और काम अल्लाह पाक मुकम्मल करेगा। एक और अ़रबी मक़ूला है : مَنْ جَدَّ وَجَدَ यानी जिस ने कोशिश की उस ने पा लिया। ख़ामोशी की आ़दत बनाने की मश्क़ (PRACTICE) करने के दौरान अपना चेहरा मुस्कुराता रखना मुनासिब है ताकि किसी को येह न लगे कि आप उस से नाराज़ हैं जभी मुंह "फुलाया" हुवा है। ख़ामोशी की कोशिश के दिनों में ग़ुस्सा बढ़ सकता है लिहाज़ा अगर कोई आप का इशारा न समझ पाए तो हरगिज़ उस पर ग़ुस्से का इज़्हार न कीजिए कि कहीं ना हक़ दिल आज़ारी वग़ैरा का गुनाह न कर बैठें। इशारे वग़ैरा से गुफ़्तगू सिर्फ़ उन्हीं के साथ मुनासिब रहती है जिन के साथ आप की ज़ेहनी हम आहंगी (यानी सोच मिलती) हो, वरना अन्जान आदमी हो सकता है कि इशारे वग़ैरा की गुफ़्तगू

समझ न आने के सबब आप से नाराज़ हो जाए, लिहाज़ा उस के साथ ज़रूरतन ज़बान से बात चीत कर लीजिए। बाज़ सूरतों में ज़बान से बोलना वाजिब भी हो जाता है मसलन मुलाक़ाती के सलाम का जवाब ज़बान से देना वग़ैरा। येह भी याद रहे कि सलाम भी इशारे से नहीं ज़बान से करना है। इस के इ़लावा भी कई मवाक़े ऐसे हैं जिन में ज़बान ही से बोलना होगा। इसी त़रह़ वालिदैन और घर के दीगर अफ़राद को भी तश्वीश होती हो तो ज़रूरतन ज़बान से गुफ़्तगू कीजिए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

## पहले तोलो बाद में बोलो का फ़ायदा

इन्सान अगर बोलने से क़ब्ल "तोलने" यानी ग़ौर करने की आ़दत डाले तो हो सकता है उसे अपनी कई फ़ुज़ूल बातें ख़ुद ही मह़सूस होनी शुरूअ़ हो जाएं ! सिर्फ़ "फ़ुज़ूल बातें" हों तो अगर्चे गुनाह नहीं मगर कई त़रह़ के नुक़्सानात उन में मौजूद हैं मसलन इन बातों में ज़बान चलाने की ज़ह़मत होती और क़ीमती वक़्त बरबाद होता है, अगर उतनी देर ज़िक्रुल्लाह, दुरूद शरीफ़ का विर्द या दीनी मुत़ालआ़ कर लिया जाए या कोई सुन्नत बयान कर दी जाए तो सवाब का अम्बार (यानी ढेर) लग जाए और फ़ुज़ूल बातों का एक बहुत बड़ा नुक़्सान येह है कि बरोज़े क़ियामत उन का ह़िसाब देना होगा।

## दहशत गर्दियों के फ़ुज़ूल तज़्किरे

مَعَاذَاللہ ! कहीं दहशत गर्दी की वारदात हो गई तो बस लोगों को फ़ुज़ूल बल्कि बाज़ सूरतों में गुनाहों भरी बह़स के लिए एक मौज़ूअ़ ही हाथ आ गया ! हर जगह उसी का तज़्किरा, बे सरो पा क़ियास आराइयां, बे तुके तब्सरे, अटकल से किसी भी पार्टी या लीडर वग़ैरा पर तोहमत लगा देना वग़ैरा। बसा औक़ात येह गुफ़्तगू लोगों में ख़ौफ़ो हिरास फैलने का बाइ़स, अफ़वाहें गर्म होने का सबब और

हंगामे बरपा होने की "वजह" भी बन सकती हैं, धमाकों और दहशत गर्दियों की वारदातें सुनने सुनाने में नफ़्स को ख़ूब दिलचस्पी होती है, बसा औक़ात लब पर दुआइया अलफ़ाज़ होते हैं मगर क़ल्ब की गहराइयों में सन्सनी ख़ेज़ ख़बरें सुनने सुनाने के ज़रीए हिज़ (यानी मज़े) उठाने और लुत्फ़ अन्दोज़ होने का जज़्बा छुपा होता है, काश ! नफ़्स की इस शरारत को पहचानते हुए हम दहशत गर्दियों और धमाकों के तज़्किरों में दिलचस्पी लेने से बाज़ आ जाएं। हां ! मज़्लूमाना शहादत पाने वालों के लिए दुआए मग़्फ़िरत, ज़ख़्मियों और मुतअस्सिरा मुसलमानों की हमदर्दियों, ख़िदमतों और अम्नो सलामती की दुआओं से गुरेज़ न किया जाए कि येह सवाब के काम हैं। बस जब भी इस त़रह़ की गुफ़्तगू करने सुनने की सूरत पैदा हो तो अपने दिल पर ग़ौर कर लेना चाहिए कि निय्यत क्या है ? अगर अच्छी निय्यत पाएं तो उम्दा और बहुत उ़म्दा है मगर अक्सर इस क़िस्म की गुफ़्तगू का ह़ासिल लुत्फ़ अन्दोज़ी ही पाया जाता है।

## बातूनी शख़्स का दिल सख़्त हो जाता है

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से मन्क़ूल है कि अल्लाह पाक के ज़िक्र के इ़लावा कोई भी बात कसरत से न करो वरना तुम्हारे दिल सख़्त हो जाएंगे और सख़्त दिल अल्लाह पाक से दूर होता है लेकिन तुम्हें इस का इ़ल्म नहीं। (تنبیہ الغافلین، ص118)

## ह़ज़रते इमाम मालिक, बातूनी शख़्स को समझाया करते

अफ़सोस ! आज कल अगर कोई "बकबक" करता है तो बाज़ लोग उस की हां में हां मिलाते और हंस हंस कर उस की ह़ौसला अफ़ज़ाई कर रहे होते हैं। याद रखिए ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم दिलो ज़बान दोनों में खरे (यानी सच्चे) होते थे। चुनान्चे करोड़ों मालिकियों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब किसी शख़्स को ज़ियादा बातें करता देखते तो उस से फ़रमाते :

"अपनी कुछ बातें अपने पास भी रोक लिया करो (यानी बातें कम किया करो)।"

(تنبیہ المغترین، ص190)

## ग़ुन्डा शरीफ़ बन गया

**ऐ अल्लाह पाक की रिज़ा के तलबगारो !** जो वाक़ेई सुधरना चाहता है उसे दावते इस्लामी के दीनी माहौल में आ जाना चाहिए। एक बड़ी प्यारी "मदनी बहार" पेश की जाती है, सुनिए और झूमिए : दावते इस्लामी से वाबस्ता होने से पहले एक नौजवान का उठना बैठना जराइम पेशा अफ़राद के साथ था, बुरी सोहबत ने रंग दिखाया और येह "ग़ुन्डा गैंग" में शामिल हो गए। लोगों को मारना पीटना, गालियां बकना और जान बूझ कर झगड़े मोल लेना इन का मामूल बन गया, येह अपने पास अस्लहा भी रखने लगे। काले करतूतों की वजह से इन्हें कोई मुंह न लगाता था। घर वाले, अज़ीज़ो अक़ारिब, अहले अलाक़ा सभी इन से बेज़ार थे। इस ग़फ़लत की नींद से बेदारी कुछ यूं नसीब हुई कि इन के अलाक़े में आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक, "दावते इस्लामी" से वाबस्ता एक बुज़ुर्ग इस्लामी भाई रहते थे, मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना से इन की महब्बत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि वोह मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना से क़रीब एक अलाक़े से पैदल नमाज़े फ़ज्र पढ़ने फ़ैज़ाने मदीना आते। जब उस बुज़ुर्ग इस्लामी भाई ने उन पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए गुनाहों से दूर रहने और नमाज़ पढ़ने की तल्क़ीन की तो इस का इन पर ऐसा असर हुवा कि इन्हों ने नमाज़ शुरूअ कर दी। एक दिन मस्जिद में उन की दावते इस्लामी के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो गई जिन की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में येह दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में तशरीफ़ लाए। यहां सुन्नतों की

बहारें थीं, दौराने इज्तिमाअ़ होने वाले बयान ने इन्हें झिंझोड़ कर रख दिया। इज्तिमाअ़ में जब सब ने मिल कर ज़िक्रुल्लाह किया तो उन को क़ल्बी सुकून मिला। इज्तिमाअ़ की बरकत से नेकी का ऐसा जज़्बा दिल में जागा कि येह दावते इस्लामी के हो कर रह गए। ग़ुन्डा गर्दी और दीगर गुनाहों से तौबा कर ली। दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत भी देने लगे। इन की ज़िन्दगी में आने वाली तब्दीली लोगों के लिए ह़ैरत का बाइ़स थी। कुछ लोग बातें बनाते और चन्द दिन के शौक़ का त़ाना दे कर उन का दिल तोड़ते मगर येह ख़ामोशी से सुन लेते और दिल में अ़हद करते कि चाहे कुछ भी हो जाए मैं दीनी माह़ौल नहीं छोड़ूंगा। गुनाहों से किनाराकशी इख़्तियार कर के नेक आमाल करने की बरकत से उन के रिज़्क़ में बरकत होने लगी, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! उन्हें अ़लाक़ाई मुशावरत के निगरान की ह़ैसिय्यत से दीनी कामों की धूमें मचाने की सआ़दत भी मिली।

संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَ الله　　तुम अपनाए रखो सदा दीनी माह़ौल
बहुत सख़्त पछताओगे याद रखो　　न अ़त्तार तुम छोड़ना दीनी माह़ौल

(वसाइले बख़्शिश, स. 646)

## "बिस्मिल्लाह" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से गुनाहों के 7 इ़लाज

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल में आने की बरकत से तौबा कर के बे शुमार बे नमाज़ी नमाज़ी और गुनाहों के आ़दी शरीअ़तो सुन्नत के पाबन्द बने। हर एक को येह बा बरकत दीनी माह़ौल ज़रूर अपनाना चाहिए। अल्लाह पाक की रह़मत से कई ज़िक्रो अज़्कार भी ऐसे हैं जो गुनाहों से बचने का सबब बन सकते हैं। यहां सात औराद पेश किए जाते हैं :

﴿1﴾ یَاعَفُوُّ : कसरत के साथ पढ़ते रहने से दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा हो जाती है।

﴿2﴾ یَامُحْصِیُ : सोते वक़्त सीने पर हाथ रख कर 7 बार पढ़ लिया करें اِنْ شَآءَ الله इ़बादत में दिल लगेगा।

﴿3﴾ یَابَاعِثُ : इ़बादत में दिल लगने के लिए सीने पर हाथ रख कर सोते वक़्त 100 बार पढ़िए, اِنْ شَآءَ الله गुनाहों से नफ़रत हो जाएगी।

﴿4﴾ یَاقَهَّارُ : चलते फिरते विर्द करते रहने से दुनिया की मह़ब्बत दूर होती है और अल्लाह पाक और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत पैदा होती है।

﴿5﴾ اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم : शैत़ान से मह़फ़ूज़ रहने के लिए रोज़ाना 10 बार पढ़िए।

﴿6﴾ یَامُحْیِیُ، یَامُمِیْتُ : बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िले के लिए हर नमाज़ के बाद सीने पर हाथ रख कर 7 बार पढ़ कर सीने पर दम करें : اِنْ شَآءَ الله बुरी आ़दतें भी छूटेंगी और इ़बादत में भी दिल लगेगा।

﴿7﴾ یَابَاطِنُ : हर नमाज़ के बाद 100 बार पढ़िए اِنْ شَآءَ الله वस्वसों और गन्दे ख़यालात से छुटकारा ह़ासिल होगा।

**नोट :** हर अ़मल के अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ ज़रूर पढ़ें। विर्द शुरूअ़ करने से क़ब्ल किसी सुन्नी आ़लिम या क़ारी साह़िब को सुना कर दुरुस्त मख़रज के साथ पढ़ें।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

## जिस नेकी का करना मुश्किल हो
## उस का सवाब भी ज़ियादा होता है

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** फ़ुज़ूल बातों की आ़दत निकाल देना वाक़ेई़ मुश्किल तरीन अ़मल है लेकिन येह बात भी बड़ी ह़ौसला अफ़ज़ा है कि जिस के लिए फ़ुज़ूल बातों की आ़दत निकाल देना जितना मुश्किल है उतना ही

उस को सवाब भी ज़ियादा मिलता है। जैसा कि सख़्त सर्दी में वुज़ू करने के बारे में फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जिस ने सख़्त सर्दी में वुज़ू किया उस के लिए दुगना (यानी डबल) अज्र है।" (جامع صغیر، ص512، حدیث:8398) इसी तरह तक्लीफ़ के साथ क़ुरआन पढ़ने वाले के बारे में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स रुक रुक कर क़ुरआन पढ़ता है और वोह उस पर शाक़ है यानी उस की ज़बान आसानी से नहीं चलती, तक्लीफ़ के साथ अदा करता है, उस के लिए दो अज्र हैं।" (مسلم، ص312، حدیث 1862) नीज़ अपनी ख़्वाहिश पर दूसरे को तरजीह़ (यानी फ़ौक़ियत व बरतरी) देने वाले के बारे में प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर किसी (दूसरे) को तरजीह़ दे तो अल्लाह पाक उसे बख़्श देता है।" (اِتحاف السادۃ، 9/779) लिहाज़ा ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अगर्चे जी तो येही चाहता है कि हम बोलते ही चले जाएं लेकिन हम कम गोई की आ़दत डालने की कोशिश करेंगे तो ज़रूर सवाब पाएंगे। (اِنْ شَآءَ الله)

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जो नेक अ़मल दुनिया में जितना दुश्वार होगा, क़ियामत के दिन मीज़ाने अ़मल (यानी आमाल तोलने के तराज़ू) में उतना ही वज़्नदार होगा।"

(तज़्किरतुल औलिया, 1/95 मुलख़्ख़सन)

## फ़ुज़ूल गोई से रुक जाए

ह़ज़रते रक्ब मिस्री رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ख़ुशख़बरी है उस के लिए जो ऐ़ब न होने के बावुजूद तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे और मिस्कीनी के बग़ैर ख़ुद को ज़लील समझे और अपना जमा

किया हुवा माल नेक कामों में ख़र्च करे और बे सरो सामान और मिस्कीन लोगों पर रहम करे और इल्मो हिक्मत वाले लोगों से मेल जोल रखे और ख़ुशबख़्ती है उस के लिए जिस की कमाई पाकीज़ा हो, बातिन अच्छा हो, ज़ाहिर बुज़ुर्गी वाला हो और जो लोगों को अपने शर से महफ़ूज़ रखे और सआदत मन्दी है उस के लिए जो अपने इल्म पर अमल करे, अपनी ज़रूरत से ज़ाइद माल को राहे ख़ुदा में ख़र्च करे और फ़ुज़ूलगोई से रुक जाए। (معجم کبیر، 5/71، حدیث:4616)

## जन्नत में अफ़सोस न होगा

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** हमें अपने वक़्त की क़द्र पहचाननी ज़रूरी है, फ़ालतू वक़्त गुज़रना कितने बड़े नुक़्सान की बात है वोह इस हदीसे मुबारक से समझिए चुनान्चे ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अहले जन्नत को इस घड़ी के सिवा किसी शै पर अफ़सोस न होगा जिस में वोह अल्लाह पाक का ज़िक्र न कर सके थे।" (معجم کبیر، 20/93، حدیث:182)

शर्हे हदीस : हज़रते अल्लामा अली क़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه हदीसे पाक के इस हिस्से : "अहले जन्नत" की वज़ाहत में लिखते हैं : "जन्नतियों का येह अफ़सोस क़ियामत के दिन जन्नत में दाख़िले से पहले होगा क्यूंकि जन्नत में नदामत व अफ़सोस न होगा।" (حرز ثمین شرح حصن حصین، ص209)

عُمر را ضائع مکُن در گفتگو یادِ اُو کُن یا دِ اُو کُن یادِ اُو

यानी अपनी उम्र फ़ुज़ूल बातों में ज़ाएअ मत करो, यादे ऊ यानी उस (अल्लाह) की याद करते रहो।

## क़लम का क़त

हज़रते सुलैम राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (वफ़ात : 447 हिजरी) का क़लम जब लिखते लिखते घिस जाता तो क़लम की नोक बनाने के लिए छीलते हुए (अगर्चे अच्छी

निय्यत से दीनी तह़रीर के लिए येह भी सवाब का काम है मगर "ऐक पंथ दो काज" यानी एक काम से दो फ़ायदे के मिस्दाक़) ज़िक्रुल्लाह शुरूअ़ कर देते ताकि येह वक़्त सिर्फ़ क़लम की नोक तराशने में ख़र्च न हो ! (تاریخ ابن عساکر، 72/260)

## जन्नत में दरख़्त लगवाइए !

यक़ीनन वक़्त बहुत ही क़ीमती है इस का इस बात से अन्दाज़ा लगाइए कि अगर आप चाहें तो इस दुनिया में रहते हुए सिर्फ़ एक सेकंड में जन्नत के अन्दर एक दरख़्त लगवा सकते हैं और जन्नत में दरख़्त लगवाने का त़रीक़ा भी बहुत ही आसान है चुनान्चे एक ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ इन चारों कलिमात में से जो भी कलिमा कहें जन्नत में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा। वोह चार कलिमात येह हैं : ﴿1﴾ سُبْحٰنَ اللہ ﴿2﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ﴿3﴾ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ ﴿4﴾ اَللہُ اَکْبَر ।

(ابن ماجہ، 4/252، حدیث: 3807)

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! जन्नत में दरख़्त लगवाना किस क़दर आसान है ! अगर बयान कर्दा चारों कलिमात (यानी अल्फ़ाज़) में से एक कलिमा (यानी अल्फ़ाज़) कहें तो एक और अगर चारों कह लेंगे तो जन्नत में चार दरख़्त लग जाएंगे। अब आप ही ग़ौर फ़रमाइए कि वक़्त कितना क़ीमती है कि ज़बान को मामूली सी ह़रकत देने से जन्नत में दरख़्त लग जाते हैं तो ऐ काश ! फ़ालतू बातों की जगह سُبْحٰنَ اللہ سُبْحٰنَ اللہ कह कर हम जन्नत में बहुत से दरख़्त लगवा लिया करें या येह भी हो सकता है कि चाहे खड़े हों, चल रहे हों, बैठे हों या कोई काम काज कर रहे हों या लेटे हों तो पांव समेट कर हम दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहें कि येह भी बहुत ही सवाब का काम है। रसूले पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा अल्लाह पाक उस पर दस रह़मतें

नाज़िल फ़रमाता है, दस गुनाह मिटाता है, दस दरजात बुलन्द फ़रमाता है।"

(نسائی، ص222، حدیث: 1294)

बैठे उठते, जागते सोते हो इलाही ! मेरा शिआ़र दुरूद

(ज़ौक़े नात, स. 74)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

## बात करने का दीनी दुनियवी फ़ायदा

**ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** कितना अच्छा हो कि बोलने से पहले इस त़रह़ तोलने की आ़दत पड़ जाए कि येह बात जो मैं करना चाहता हूं इस में कोई दीनी या दुनियवी फ़ायदा भी है या नहीं ? अगर येह बात फ़ुज़ूल लगे तो बोलने के बजाए काश ! "अल्लाह अल्लाह" कहना या दुरूद शरीफ़ पढ़ना नसीब हो जाए ताकि ढेरों सवाब हाथ आए या फिर سُبْحٰنَ اللهِ या اَلْحَمْدُ لِلّٰه या لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ या اَللهُ اَكْبَر कह कर जन्नत में दरख़्त लगवाने की सआ़दत मिल जाया करे।

## سُبْحٰنَ اللهِ कहने कहलवाने की निय्यत

याद रहे ! बत़ौरे तअ़ज्जुब या बत़ौरे दादो तह़सीन اَللهُ اَكْبَر या سُبْحٰنَ اللهِ ! वग़ैरा कहने पर भी सवाब मिलता है ता हम ज़िक्रुल्लाह की निय्यत भी शामिल कर ली जाए तो ज़ियादा सवाब मिलेगा। बाज़ औक़ात मुबल्लिग़ीन व नात ख़्वां ह़ाज़िरीन से कहते हैं : "बोलो ! سُبْحٰنَ اللهِ" येह कहलवाना भी कारे सवाब और जो कहे वोह भी सवाब का ह़क़दार, ताहम अगर कहलवाने वाले सवाब की निय्यत के साथ यूं कहें तो ज़ियादा बेहतर है कि "ज़िक्रुल्लाह की निय्यत से कहिए : سُبْحٰنَ اللهِ" इस पर जो भी ज़िक्रुल्लाह की निय्यत से سُبْحٰنَ اللهِ कहेगा उस का सवाब बढ़ जाएगा।

ह़ज़रते अ़ल्लामा ऐनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 855 हिजरी) फ़रमाते हैं : किसी चीज़ पर तअ़ज्जुब के वक़्त اَللهُ اَكْبَر और سُبْحٰنَ اللهِ कहना मुस्त़ह़ब है।

(15/335،عمدۃالقاری) हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ "मिरआत" में फ़रमाते हैं : जो कोई سُبْحٰنَ اللّٰہ या اَللّٰہُ اَکْبَر या اَلْحَمْدُ لِلّٰہ या لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ किसी तरह भी कहे सदक़ए नफ़्ली का सवाब पाएगा ख़्वाह ज़िक्रुल्लाह की निय्यत से कहे या किसी हाजत के लिए बतौरे वज़ीफ़ा येह अल्फ़ाज़ पढ़े या अजीब बात सुन कर سُبْحٰنَ اللّٰہ वग़ैरा कहे या ख़ुशख़बरी पा कर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ पढ़े। बहर हाल सवाब मिलेगा क्यूंकि अल्लाह का नाम लेना बहर हाल (यानी हर हाल में) इबादत है । (मिरआत, 3/98) अल ग़रज़ हर तरह के ज़िक्रो अज़्कार और औरादो वज़ाइफ़, तिलावते क़ुरआन करने और दुरूदो सलाम पढ़ने और इबादते महज़ा (यानी ख़ालिस इबादत के कामों) पर अलग से सवाब की निय्यत न हो तब भी सवाब मिलता है और अगर सवाब की निय्यत कर लें तो सवाब बढ़ जाएगा।

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे मेरी फ़ुज़ूल गोई की आदत निकाल दो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

## साठ साल की इबादत से बेहतर

अगर कुछ पढ़ने के बजाए ख़ामोश रहने को जी चाहे तो उस में भी सवाब कमाने की सूरतें हैं और वोह येह कि उल्टे सीधे ख़यालात में पड़ने के बजाए आदमी यादे ख़ुदावन्दी या यादे मदीना व शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में गुम हो जाए या इल्मे दीन में ग़ौरो तफ़क्कुर शुरूअ कर दे या मौत के झटकों, क़ब्र की तन्हाइयों, उस की वहशतों और महशर की हौलनाकियों की सोच में डूब जाए तो इस तरह भी वक़्त ज़ाएअ नहीं होगा बल्कि एक एक सांस اِنْ شَآءَ اللّٰہ इबादत में शुमार होगा। चुनान्चे मक्की मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : (उमूरे आख़िरत के मुतअल्लिक़) घड़ी भर के लिए ग़ौरो फ़िक्र करना 60 साल की इबादत से बेहतर है। (جامع صغیر، ص365، حدیث:5897)

उन की यादों में खो जाइए मुस्तफ़ा मुस्तफ़ा कीजिए

## अनमोल लम्ह़ात की क़द्र

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** ज़िन्दगी के दिन चन्द घन्टों से और घन्टे मिनटों से इ़बारत हैं, ज़िन्दगी का हर सांस अनमोल हीरा है, काश ! एक एक सांस की क़द्र नसीब हो जाए कि कहीं कोई सांस बे फ़ायदा न गुज़र जाए और बरोज़े क़ियामत ज़िन्दगी का ख़ज़ाना नेकियों से ख़ाली पा कर अश्के नदामत (यानी शर्मिन्दगी के आंसू) न बहाने पड़ जाएं ! सद करोड़ काश ! एक एक सेकन्ड का ह़िसाब करने की आ़दत पड़ जाए कि किस त़रह गुज़र रही है, ज़हे मुक़द्दर ! ज़िन्दगी की हर हर साआ़त (यानी घड़ी) फ़ायदे ही के कामों में सर्फ़ (यानी ख़र्च) हो। बरोज़े क़ियामत वक़्त को फ़ुज़ूल बातों, ख़ुश गप्पियों में गुज़रा हुवा पा कर कहीं कफ़े अफ़सोस मलते न रह जाएं !

## नदामत का बहुत बड़ा सबब

सह़ाबिए रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं अपनी ज़िन्दगी के गुज़रे हुए उस दिन के मुक़ाबले में किसी चीज़ पर नादिम (यानी शर्मिन्दा) नहीं होता जो दिन मेरा नेक आमाल बढ़ने से ख़ाली हो।"

## वक़्त तल्वार की त़रह़ है

ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : वक़्त तल्वार की त़रह़ है तुम उस को (नेक आमाल के ज़रीए) काटो वरना (फ़ुज़ूलिय्यात में मश़ग़ूल कर के) येह तुम को काट देगा। (لوقح الانوار القدسیۃ، ص83)

## सकरात में तिलावत

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ वक़्ते नज़ा क़ुरआने पाक पढ़ रहे थे, उन से पूछा गया : इस वक़्त में भी तिलावत ? इरशाद फ़रमाया : मेरा नामए आमाल लपेटा जा रहा है तो जल्दी जल्दी उस में नेकियां बढ़ा रहा हूं। (صید الخاطر، ص227)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

## जब फ़ैज़ाने सुन्नत घर में दाख़िल हुई

اَللّٰہُ اَکْبَر ! दुनिया से जाते वक़्त भी क़ुरआने करीम की तिलावत का जज़्बा ! अल्लाह पाक हमें भी तिलावते क़ुरआने करीम का शौक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन। तिलावत का जज़्बा पाने और गुनाहों की आ़दतों से पीछा छुड़ाने के लिए दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से हर दम वाबस्ता रहिए और मक्तबतुल मदीना की इस्लामी किताबों का मुत़ालआ़ कीजिए आप की तरग़ीब के लिए अ़र्ज़ है कि एक इस्लामी भाई दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल में आने से पहले दुनिया की रंगीनियों और गुनाहों की वादियों में भटक रहे थे, नमाज़ें क़ज़ा करना, झूट, ग़ीबत, चुग़ली और दीगर कई कबीरा (यानी बड़े बड़े) गुनाहों का सिल्सिला जारी था, उन की ज़िन्दगी में इस्लाह़ का सामान कुछ यूं हुवा कि एक दिन दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता उन के ख़ालाज़ाद भाई उन के घर आए, उन का सादा मगर दीनी लिबास देख कर सब घर वाले उन से मुतअस्सिर हुए, उन्हों ने घर वालों को दावते इस्लामी की मदनी बहारें सुनाईं जिस से दावते इस्लामी की मह़ब्बत घर वालों के दिल में बस गई, मज़ीद येह कि उन्हों ने एक किताब भी तोह़फ़े में दी जिस का नाम "फ़ैज़ाने सुन्नत" था जब उन इस्लामी भाई और उन के घर के दीगर अफ़राद ने इस किताब का मुत़ालआ़ किया तो उन के घर में मुस्बत तब्दीलियां आने लगीं और एक वक़्त आया कि येह घराना दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता हो गया, कुछ दिनों बाद जब इन इस्लामी भाई ने दावते इस्लामी के सुन्नतें सीखने सिखाने के क़ाफ़िले में सफ़र किया तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ इस की बरकत से उन्हों ने अपने चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ एक मुट्ठी दाढ़ी और सर पर इ़मामे शरीफ़ का ताज

सजा लिया, मज़ीद करम येह हुवा कि न सिर्फ़ ख़ुद उन इस्लामी भाई ने जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी में दाख़िला लिया बल्कि उन के साथ उन की दो बहनों ने भी जामिअ़तुल मदीना (गर्लस) में दर्से निज़ामी के लिए दाख़िला ले लिया।

**ऐ आ़शिक़ाने सुन्नते मुस्त़फ़ा !** तोह़फ़ा देना और क़बूल करना सुन्नत है, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : تَهَادَوْا تَحَابُّوْا यानी "एक दूसरे को तोह़फ़ा (गिफ़्ट, GIFT) दो मह़ब्बत बढ़ेगी।" (موطا،2/407،حدیث:1731) इस ह़दीसे पाक से मालूम हुवा गिफ़्ट (GIFT) देने से मह़ब्बत बढ़ती है और अगर वोह तोह़फ़ा किसी दीनी किताब का हो तो मह़ब्बत के साथ साथ इ़ल्मे दीन में इज़ाफ़ा भी हो सकता है। लिहाज़ा हो सके तो दावते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना से इस्लामी किताबें ख़रीद फ़रमा कर अपने अ़ज़ीज़ों और दोस्तों को तोह़फ़तन पेश कीजिए, अपने मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिए, शादी ग़मी की मह़फ़िलों और दीगर तक़रीबात में तक़्सीम कीजिए, न सिर्फ़ तक़्सीम कीजिए बल्कि ख़ुद भी इन किताबों के मुत़ालए़ को अपना मामूल बना लीजिए, اِنْ شَآءَ الله इ़ल्मे दीन का ढेरों ख़ज़ाना ह़ासिल होगा।

अ़मल का हो जज़्बा अ़त़ा या इलाही　　गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
सआ़दत मिले दर्से "फ़ैज़ाने सुन्नत"　　की रोज़ाना दो मरतबा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 102-103)

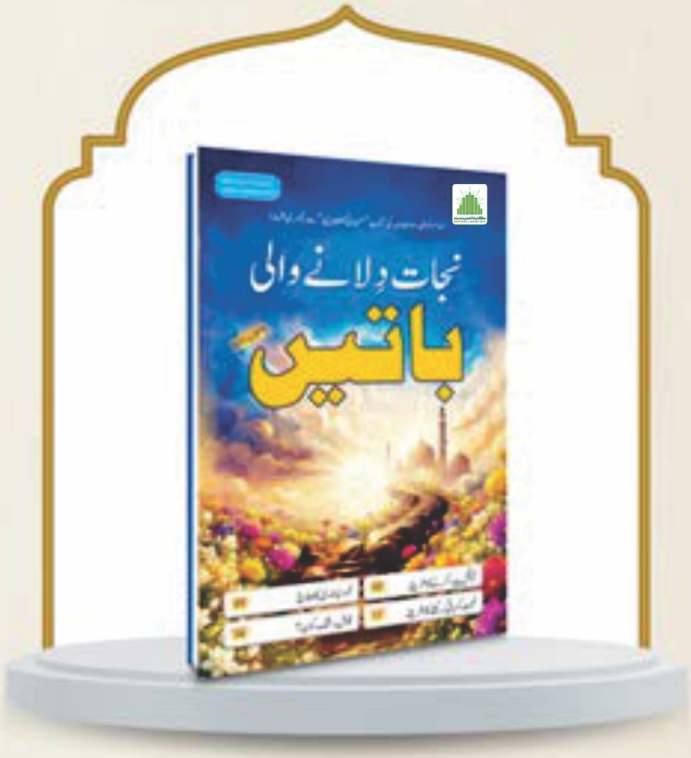
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب　❀❀❀　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! हमें फ़ुज़ूल बातों से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।

اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب　❀❀❀　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

## अगले हफ़्ते का रिसाला




DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

**Delhi :** 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

**Mumbai :** 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

**Ahmedabad :** Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

**Nagpur :** Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025